

श्रीः

श्रीराममन्त्रसाहात्म्यम् ।

आस्तिको धर्मशीलश्च शीलवान् वैष्णवः शुचिः । गंभीरश्चतुरो
धीरः शिष्य इत्यभिधीयते ॥ शरीरं वसु विज्ञानं वासः कर्म गुणान-
सूत्रम् । गुर्वर्थं धारयेद्यस्तु स शिष्यो नेतरः स्मृतः ॥ इत्याद्युक्तलक्ष-
णविशिष्टः शिष्यः । संसारसागरं घोरमनन्तक्लेशभाजनम् ॥ इति सं-
सारस्य क्लेशबहुलतया । आरोग्यमिन्द्रियौलबण्यमैश्वर्यं शत्रुशालिता ॥
वियोगो बान्धवैरायुः किं तद्येनात्र तुष्यति ॥ इति इहलोके तोष्ट-
व्यवस्त्वमावाच्च हेयतया संसारं जानन् आचार्यसकाशात् श्रीरामरा-
मरामेति रमे रामे मनोरमे । सहस्रनाम तज्जुल्यं रामनाम वरानने ॥
इत्युक्तप्रकारेण सहस्रनामतुल्यश्रीराममंत्रमधिगम्य तदेकपरायणः स-
र्वदा जपन् परमपुरुषार्थभूतं मोक्षं सुखेन प्राप्नोतीति सर्वशास्त्रसम्म-
तम् । अत एतद्रामनामामृतास्वादलिप्सूनां तज्जपैकपरायणानां जप-
काले एकाग्रमनस्संपादनार्थं तन्नाम - मुद्रापितम् । तदेतत्साधवोऽ-
गीकृत्य मत्प्रमोक्षं साफलं कुर्यैरिति मन्ये ।

श्रीस्वामीगुरुजातकीन्द्रमहाराजकी कृपासे पुष्करदासशिष्य

सबालक्ष नामः श्रीरामनाममोक्षगीताविरचित किया गुरु

द्वाराश्रीपुष्करराजजन्मस्थान फूलपूर जिला प्राग-

राज मिति फाल्गुण वदी १३ संवत् १९५२,

वार मंगलमुखी,



पुष्करदासकृत-मोक्षगीता ।

सूत उवाच ॥ तत्रैव गङ्गा यमुना च वेणी गोदावरी सिन्धुसरस्वती च ॥
 सर्वाणि तीर्थानि वसन्ति तत्र यत्राच्युतो द्वारकथाप्रसङ्गः ॥ ब्रह्मोवाच ॥
 ये मानवा विगतरागपराधरज्ञानारायणसुरगुरुं सततं स्मरन्ति ॥ ध्यानेन तेन
 हतकल्मषचेतनास्ते मातुः पयोधररसं न पुनः पिबन्ति ॥ इन्द्र उवाच ॥
 नारायणो नाम नरो नराणां प्रसिद्धचोरः कथितः पृथिव्याम् ॥ अनेकजन्मा-
 जितपापसंचयं हरत्यशेषं स्मरतां सदैव ॥ नारद उवाच ॥ जन्मान्तरसहस्रेण
 जपो ध्यानसमाधिभिः ॥ नराणां क्षीणपापानां रामभक्तिः प्रजायते ॥
 ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ किं तस्य दानैः किं तीर्थैः किं तपोभिः किमध्वरैः ॥
 यो नित्यं ध्यायते देवं नराणां मनसि स्थितम् ॥ गोकोटिदानं ग्रहणेषु काशी
 प्रयागगङ्गायुतकल्पवासः ॥ यज्ञायुतं मेरुसुवर्णदानं गोविंदनाम्ना न समं न
 तुल्यम् ॥ महादेव उवाच ॥ शरीरं च नश्चिच्छ्रं व्याधिग्रस्तं कष्टेवरम् ॥
 औषधं जाह्नवीतोयं वैद्यो नारायणो हरिः ॥

श्रीराम श्रीराम सर्व देव देव । श्रीराम श्रीराम संत भक्त सेव ॥
 श्रीराम श्रीराम विश्वकरता वो आपी । श्रीराम श्रीराम संतो अजापी ॥
 श्रीराम श्रीराम घट घट वो वासी । श्रीराम श्रीराम त्रिविध तापनासी ॥
 श्रीराम श्रीराम चराता चरावे । श्रीराम श्रीराम सदा ध्यान छावे ॥
 श्रीराम श्रीराम ब्रह्म सोहाये । श्रीराम श्रीराम चार वेदो बनाये ॥
 श्रीराम श्रीराम शंभू समाधी । श्रीराम श्रीराम सब कार्य साधी ॥
 श्रीराम श्रीराम रत्न वो शेश । श्रीराम श्रीराम त्रिलोकी नेश ॥
 श्रीराम श्रीराम शारदा पुकारे । श्रीराम श्रीराम भवते उवारे ॥
 श्रीराम श्रीराम नारद निहारो । श्रीराम श्रीराम सबे सुखकारो ॥

श्रीराम श्रीराम करता विकरता । श्रीराम श्रीराम सागर वो सरिता ॥
 श्रीराम श्रीराम सब रूप धावे । श्रीराम श्रीराम असुरो नसावे ॥
 श्रीराम श्रीराम कवीजन जनावे । श्रीराम श्रीराम सदा कीर्त गावे ॥
 श्रीराम श्रीराम जपो नित निहारो । श्रीराम श्रीराम दास पुष्कर पुकारो ॥

पुष्करदासकृत-मोक्षगीता ।

छंद-मन सुमिर ले श्रीराम सिरजनहार संशय नहिं करो । नित धरो
हृदय नाम रामहिं कूपभौते तू तरो ॥ श्रीरामनाम पुकार ब्रह्मा ध्यान शंकर
जेहि धरो । सुर शेष शारद सहित नारद नामरस इंद्रो भरे ॥ श्रीरामनाम
प्रमान जानो वेद शास्त्र पुरानमें । किये वर्त तीरथ मन अनेको श्रीगुरु मंत्र
दीन्हो कानमें ॥ श्रीरामनाम गुन गाय गंधर्व हृदय आनंदमें भरे । श्रीराम
भक्तन संत सेवे जाको यमपुर क्या करे ॥ श्रीरामनाम सुमेर जानो मुक्त-
माला मुख धरो । सवा लक्ष नामहिं रत्न करि करि कहे दास पुष्कर भौ
तरो ॥ मन समझ बारम्बार विनती त्रिलोकीनाथ श्रीराम हय । जेहि गती
मुक्ती देनहारो सकल पूरण कामजय ॥ नररूप भूप श्रीअवध प्रगटे भूमि
भार उतारने । किये कारने करुणाके सागर कोटि पतितन तारने ॥ छवि
क्रीट कुंडल धनुषवान कमान तरकस कटि कसे । वसे तीर सरजू धार विहरे
संतजन सदही हँसे ॥ मुनि यज्ञ जाय सहाय कीन्हो कोटि असुरन क्षण भरे ।
करे गवन भवने जनकजूके धनुष खंडन वो करे ॥ बहु भाति सजि वरात
व्याहे सुर सुमन धरपा किये । फिरि आय जाय वनवास कोन्हो ऋषिन
मुनि हरपित लिये ॥ कपिभाल संयेना साजि सागरतीर त्रिभुवनके धनी ।
हनी असुर सबही भक्तके हित दास पुष्कर सुख धनी ॥ दोहा ॥ श्रीराम-
नाम मन दीप धरो । कोटिन भानु प्रकाश ॥ पुष्करदास यह नाम गुन ।
अज्ञान तिभिरकी नाश ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

दोहा-महिमा चौदा भुवनमें । श्रीराम नाम विस्तार ॥ सुनो सज्जन
जन श्रवन दय । पुष्करदास पुकार ॥ १ ॥ वेद विदित ब्रह्मा किये । व्यास
आदि पुरान ॥ कविजन जीवन जन्म कियो । अनुरागमें राग बखान ॥ २ ॥
श्रीराम नाम योगी जपे । जंगल और पहार ॥ मये अनेक जग भक्तजन ।
नाम हृदय आधार ॥ ३ ॥ श्रीराम नाम कहि पतित तरो । भरो अनेक
बेकार ॥ पुष्करदास प्रभु परमहित । भजु मन बारवार ॥ ४ ॥ सवा लक्ष
श्रीरामनाम । नित उठि कीजे पठ ॥ अंतसमय प्रभुके धाम जा । यमकी
फाँसी काट ॥ ५ ॥ श्रीरामनाम विन नाहें तरो । करो अनेक उपाय ॥

पुष्करदासकृत-मोक्षगीता ।

धाय मरो चौरासिमें । जन्म अकारथ जाय ॥ ६ ॥ श्रीरामनामक लतहा ।
 तनकी ताप नसाय ॥ पुष्करदास विचारं कहे । दूजो नहीं सहाय ॥ ७ ॥
 श्रीरामनाम सुख धाम ह्य । पूर करे सब काम ॥ दाम नहीं दमरी लगे ।
 तुरत तरे नर याम ॥ ८ ॥ श्रीरामनामको रूप गुण । शेष न पावे पार ॥
 पुष्करदास मति मंदको । प्रभू करो भवपार ॥ ९ ॥ वार वार सुनु भाइयो ।
 अंभ ताजि भजु श्रीराम ॥ पुष्करदास पछितायगा । अंत समे क्या काम ॥
 ॥ १० ॥ श्रीराम रूप प्रगटे प्रभू । श्रीअवधपुरी सुख धाम ॥ कौशिल्या
 दशरथ हित । भय जनकसुताके वाम ॥ ११ ॥ ज्रीट मुकुट कर धनुष
 धरी । हरी अनेक बेकार ॥ रवि शशि कोटि वदन छवी । महिमा अपरं
 पार ॥ १२ ॥ मुनिके यज्ञ सुफल भयो । गयो चरण पद घाय ॥ सब
 भूपनके मान मथन किये । शंभू चाप चढाय ॥ १३ ॥ जनक स्वयंवर करि
 हरी । गई अहल्या धाम ॥ पुष्करदास प्रभु पिता वचन । वन वन किये
 विश्राम ॥ १४ ॥ सुरमुनि सुख सबही दिहो । लिहो भालु कपि साथ ॥
 सागर नौका नामको । निशिचर कियो निपात ॥ १५ ॥ अवधपुरी पग
 धारेहु । भक्त संत हितकार ॥ पुष्करदास मति मंदको । प्रभू उतारो पार ॥
 ॥ १६ ॥ जव जव असुरों दल वढे । धरो अनेक अवतार ॥ भूमिको भार
 उतारेहु पुष्करदास पुकार ॥ १७ ॥ सोरठा ॥ तन धन रहे न कोय ।
 रहे नाम श्रीरामको ॥ प्रेमबीज धन बोय । मन माने फल चाखिये ॥ १८ ॥

पुष्करदास सब संतोंसज्जनोसे चारंबार प्रार्थना करता हूं सवालक्ष नाम
 मोक्षगीता नितक्रियायाठ करने योग्य है सकल कार्य सिद्धि करनेवाला
 श्रीरामचंद्र दसखत पुष्करदास संत वैष्णव ॥ सम्पूर्ण ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
 लक्ष्मीविकटेश्वर " छापाखाना,
 कल्याण-मुंबई.

